NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

आम की उन्नत खेती

राधा* एवं डॉ. अतुल यादव**

परिचय:

आम जिसका वैज्ञानिक नाम ***मेंगीफेरा इंडिका*** है। आम मैंगीफेरा प्रजाति से संबंधित है जिसमें फूल वाले पौधे परिवार(एनाकार्डियासी) में उष्णकटिबंधीय फलदार पेड़ों की लगभग 30 प्रजातियां शामिल हैं।आम की खेती लगभग पूरे देश में की जाती है। यह मनुष्य का बहुत ही प्रीय फल माना जाता है जो की अलग अलग प्रजातियों के मुताबिक फली में कम ज्यादा मिठास पायी जाती है। कच्चे आम से चटनी आचार अनेक प्रकार के पेय के रूप में प्रयोग किया जाता है। इससे जैली जैम सीरप आदि बनाये जाते हैं। यह विटामीन ए एव बी का अच्छा स्त्रोत है।

भूमि एव जलवायु

आम की खेती उष्ण एव समशीतोष्ण दोनों प्रकार की जलवायु में की जाती है। आम की खेती समुद्र तल से 600 मीटर की ऊँचाई तक सफलता पूर्वक होती है इसके लिए 23.7 से 26.5 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान अति उत्तम होता है। आम की खेती प्रत्येक किस्म की भूमि में की जा सकती है। अधिक बलुई, पथरीली, क्षारीय तथा जल भराव वाली भूमि में इसे उगाना लाभकारी नहीं है, तथा अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि सर्वोत्तम मानी जाती है।

आम की प्रजातियां

हमारे देश में उगाई जाने वाली किस्मों में, दशहरी, लगडा, चौसा, फजरी, बाम्बे ग्रीन, अलफांसी, तोतापरी, हिमसागर, किशनभोग, नीलम, सुवर्णरेखा, वनराज आदि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियाँ है।

आम की संकर किस्में:-

आम्रपाली

यह दशहरी और नीलम किस्मों के संकरण से बनी संकर प्रजाति है। आम्रपाली नियमित रूप से फलने वाली बौनी प्रजाति है। इस किस्म को सघन बागवानी के लिये अत्यंत उपयुक्त पाया गया है। इसके फल जुलाई के अंतिम सप्ताह में पकने लगते हैं। फल गूदेदार व रेशारहित होते हैं। आम्रपाली गृह वाटिका में लगाने के लिये भी उपयुक्त किस्म है। इसके पौधों को 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगाकर एक हैक्टर क्षेत्रफल में 1600 पौधे उगाए जा सकते हैं।

राधा* एवं डॉ. अतुल यादव**
शोध छात्रा एवं सहायक प्राध्यापक
फल विज्ञान, विभाग
आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, 224 229 (यूपी)

मल्लिका

यह किस्म नीलम और दशहरी किस्मों के संकरण से तैयार की गयी है मल्लिका नियमित फल देने वाली मध्यम ओजस्वी प्रजाति है। इसके पौधों को 8 x 8 मीटर पर रोपण करके प्रति हैक्टर क्षेत्रफल में 156 वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इसके फल बड़े आकार के अत्यधिक गूदायुक्त व स्वादिष्ट होते हैं। फल मध्य जुलाई में पकने शुरू होते हैं। यह किस्म दक्षिण भारत में अधिक प्रचलित है। विगत वर्षों में इसके फलों का निर्यात अमेरिका तथा खाड़ी देशों में किया गया है।

पूसा लालिमा

यह किस्म दशहरी व सेंसेशन किस्मों के संकरण से तैयार की गयी है। इसके वृक्ष मध्यम आकार के होते हैं और एक हैक्टर क्षेत्रफल में 278 पौधे लगाये जा सकते हैं। पूसा लालिमा नियमित फलन और शीघ्र पकने वाली प्रजाति है।

इसके फल लाल रंग के व मध्यम आकार के बहुत ही आकर्षक होते हैं, जिनमें गूदा 70.2 प्रतिशत होता है। जून के पहले पखवाड़े में ये फल पकने प्रारंभ हो जाते हैं।

पूसा पीताम्बर

यह नियमित फल देने वाली व सघन बागवानी के लिये उपयुक्त किस्म है। इसको आम्रपाली व लाल सुन्दरी किस्मों के संकरण से तैयार किया गया है। 6 x 6 मीटर की दूरी पर एक हैक्टर क्षेत्रफल में पूसा पीताम्बर के 278 वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इसके फल मध्यम आकार के व पकने पर आकर्षक पीले रंग के हो जाते हैं। ये फल रसीले एवं मनमोहक सुगंध वाले होते हैं। इनमें 18.7 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ होता है। ऐसा देखा गया है कि इस प्रजाति में गुच्छा रोग कम लगता है।

पूसा श्रेष्ठ

यह प्रत्येक वर्ष फलने वाली अत्यन्त आकर्षक किस्म है, जिसकी उत्पत्ति आम्रपाली व सेंसेशन किस्मों के संकरण से हुई है। इसके पौधे 6 x 6 मीटर की दुरी पर रोपण करके एक हैक्टर क्षेत्रफल में 278 वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इसके फल आकर्षक, सुगंधित व लाल रंग लिए लंबाकार होते हैं, जिनमें 20.2 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ होता है। पूसा श्रेष्ठ के फल जुलाई के पहले सप्ताह में पकने आरंभ हो जाते हैं और पके फलों को 7-8 दिनों तक आसानी से रखा जा सकता है।

पूसा प्रतिभा

यह प्रत्येक वर्ष फल देने वाली किस्म है, जिसे आम्रपाली व सेंसेशन किस्मों के संकरण से तैयार किया गया है। पूसा प्रतिभा के वृक्ष मध्यम आकार के होते हैंऔर एक हैक्टर क्षेत्रफल में 278 पौधे लगाये जा सकते हैं। इसके फल जुलाई के पहले सप्ताह में

पकने शुरू हो जाते हैं। इस प्रजाति के फलों की पीली सतह पर लाल रंग की आभा बहुत ही आकर्षक होती है। इसके फलों में अच्छी सुगंध व मध्यम मिठास (19.4 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) होती है। फलों की निधानी आयु लगभग 7-8 दिनों की होती है। इस तरह की रंगीन छिलके वाली किस्मों की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बड़ी मांग है।

पूसा सूर्या

यह विदेशी किस्म **'एल्डन'** का ही रूप है। इसमें नियमित फलन होता है और इसके वृक्ष मध्यम ओजस्वी होते हैं। इसके फल बड़े आकार के आकर्षक सुनहरे पीले रंग के होते हैं। एक हैक्टर क्षेत्रफल में इसके लगभग 278 वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इसके फल मीठे (19.4 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) व मनमोहक सुगंध वाले होते हैं। फलों में 70 प्रतिशत गूदा होता है। फल जुलाई के मध्य से पकने शुरू हो जाते हैं। इस प्रकार की किस्मों की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत मांग है।

पूसा अरुणिमा

यह किस्म आम्रपाली व सेंसेशन किस्मों के संकरण से तैयार की गयी है। इसमें नियमित फलन होती है और वृक्ष मध्यम ओजस्वी होते हैं। पूसा अरुणिमा के पौधों को 6 x 6 मीटर दूरी पर लगाना चाहिए और एक हैक्टर क्षेत्रफल में 278 पौधे लगाये जा सकते हैं। इसके फल बड़े आकार (250 ग्राम) के लालिमा लिए अत्यन्त आकर्षक होते हैं। यह देर से पकने वाली प्रजाति है। इसके फल अगस्त के पहले सप्ताह में तैयार हो जाते हैं। फलों में मध्यम मिठास (19.5 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) होती है। पकने के बाद फलों को सामान्य कमरे के तापमान पर 11-12 दिनों तक आसानी से रखा जा सकता है।

उपरोक्त सभी संकर किस्में भाकृअनुपभारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में विकसित की गयी हैं। इनके अतिरिक्त देश के विभिन्न संस्थानों द्वारा भी आम की नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है, जिनका विवरण निम्न है:-

आम की नवीन प्रजातियां

अर्का अरुणा

यह नियमित फल देने वाली बौनी किस्म है। इसको बैंगनपल्ली व अल्फांसो किस्मों के संकरण से तैयार किया गया है। अर्का अरुणा के फल मीठे (20 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) व लालिमा लिए होते हैं। फलों का गूदा पीले रंग का व रेशारहित होता है।

अर्का पुनीत

यह किस्म अल्फांसो व बैंगनपल्ली किस्मों के संकरण से तैयार की गयी है। अर्का पुनीत नियमित फलन देने वाली प्रजाति

है। इसके फल पकने पर पीले रंग के लालिमा लिए होते हैं। फल मीठे (21 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) व रेशारहित अंडाकार होते हैं।

अरुणिमा

यह आम्रपाली व वनराज किस्मों के संकरण से तैयार नियमित फलन देने वाली प्रजाति है। इसके फल मध्यम आकार (190-210 ग्राम) के तथा आकर्षक लाल रंग के होते हैं। फल मीठे (24.5 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ) व गृदा नारंगी पीले रंग का होता है।

अंबिका

यह किस्म आम्रपाली व जनार्दन पसंद किस्मों के संकरण से विकसित की गई है। अंबिका नियमित फल देने वाली व देर से पकने वाली प्रजाति है। इसके फल लंबोत्तर अंडाकार व लगभग 300-350 ग्राम वजन के होते हैं। फल आकर्षक पीले रंग के एवं लालिमा लिए होते हैं। फलों में 20 प्रतिशत कुल घुलनशील ठोस पदार्थ पाया जाता है।

अरुणिमा और अबिका किस्में भाकृअनुप -केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) द्वारा तैयार की गयी हैं।

सिन्धु

इस किस्म को रत्ना व अल्फांसो किस्मों के संकरण से तैयार किया गया है। यह नियमित फलन देने वाली प्रजाति है। सिन्धु के फलों में गुठली बहुत पतली व छोटी होती है। इसके फल आकर्षक, मध्यम आकार के व रेशारहित होते हैं।

रत्ना

इस किस्म को नीलम व अल्फांसो के संकरण से तैयार किया गया है। यह नियमित फलन देने वाली प्रजाति है। इसके फल आकर्षक. स्पंजी व रेशारहित होते हैं।

गड्ढा एवं वृक्षारोपण :-

वर्षाकाल आम के पेड़ों को लगाने के लिए सारे देश में उपयुक्त माना गया है। जिन क्षेत्रों में वर्षा आधिक होती है वहां वर्षा के अन्त में आम का बाग लगाना चाहिए। लगभग 50 सेन्टीमीटर व्यास एक मीटर गहरे मई माह में खोद कर उनमें लगभग 30 से 40 किलो ग्राम प्रति गढ्ढा सड़ी गोबर की खाद मिटटी में मिलाकर और 100 ग्राम क्लोरोपाइरिफास पाउडर भर देना चाहिए। पौधों की किस्म के अनुसार 10 से 12 मीटर पौध से पौध की दूरी होनी चाहिए, परन्तु आम्रपाली किस्म के लिए यह दूरी 2.5 मीटर ही होनी चाहिए।

प्रवर्धन:-

आम के बीजू पौधे तैयार करने के लिए आम की गुठलियों को जून-जुलाई में बुवाई कर दी जाती है आम की प्रवर्धन की विधियों में भेट कलम, विनियर, साफ्टवुड

ग्राफ्टिंग, प्रांकुर कलम, तथा बडिंग प्रमुख हैं, विनियर एवं साफ्टवुड ग्राफ्टिंग द्वारा अच्छे किस्म के पौधे कम समय में तैयार कर लिए जाते हैं।

खाद एवं उर्वरक

बागी की दस साल की उम्र तक प्रतिवर्ष उम्र के गुणांक में नाइट्रोजन, पोटाश तथा फास्फोरस प्रत्येक को १०० ग्राम प्रति पेड़ जुलाई में पेड़ के चारों तरफ बनायी गयी नाली में देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त मृदा की भौतिक एवं रासायनिक दशा में सुधार हेतु 25 से 30 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद प्रति पौधा देना उचित पाया गया है। जैविक खाद हेतु जुलाई-अगस्त में 250 ग्राम एजीसपाइरिलम को 40 किलोग्राम गोबर की खाद के साथ मिलाकर थाली में डालने से उत्पादन में वृदि पाई गयी है।

सिंचाई

आम की फसल के लिए बाग़ लगाने के प्रथम वर्ष सिंचाई 2-3 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार करनी चाहिए 2 से 5 वर्ष पर 4-5 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार करनी चहिये। तथा जब पेड़ों में फल लगने लगे तो दो तीन सिंचाई करनी अति आवश्यक है। आम के बागों में पहली सिचाई फल लगने के पश्चात दूसरी सिचाई फली का काँच की गोली के बराबर अवस्था में तथा तीसरी सिचाई फली की पूरी बढ़वार होने पर करनी चाहिए। सिचाई नालियों द्वारा थाली में ही करनी चाहिए जिससे की पानी की बचत हो सके।

आम के बाग को साफ रखने के लिए निराई गुड़ाई तथा बागों में वर्ष में दो बार जुताई कर देना चाहिए इससे खरपतवार तथा भूमिगत कीट नष्ट हो जाते हैं इसके साथ ही साथ समय समय पर घास निकालते रहना चाहिए।

पौधों को कीट तथा रोग से बचायें

आम के पौधों में ज्यादा रोग तथा कीट नहीं लगतें है लेकिन कुछ रोग एसे जरुर हैं जिसके कारण पौधा ही सुख जाता है| इन सभी तरह के रोग से बचाव के लिए यह

कीट का नाम	लक्षण	नियंत्रण
मैंगो हापर	फरवरी मार्च में कीट आक्रमण करता है। जिससे फूल-फल झाड़ जाते है एवं फफूँद पैदा होती है।	क्विीनालाफास का एक एम.एल दवा एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
मिलीबग	फरवरी में कीट टहनियों से रस चूसते हैं जिससे फूल फल झड़ जाते है।	क्लोरपायरीफास का 200 ग्राम प्रति पौधा छिड़काव करें।
मालफारर्मेषन	पौधों की पत्तियां गुच्छे का रूप धारण करती है एवं फूल में नर फूलों की संख्या बड़ जाती है।	प्रभावित फूल को काटकर दो एम.एल. नेप्थलीन ऐसटिक एसिड का छिड़काव 15 दिन के अंतर से 2 बार करें।

सभी उपाय करना जरुरी है |

उपज

रोगों एवं कीटी के पूरे प्रबंधन पर प्रति पेड़ लगभग 150 किलोग्राम से 200 किलोग्राम तक उपज प्राप्त हो सकती है। लेकिन प्रजातियों के आधार पर यह पैदावार अलग-अलग पाई गयी है।